आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2481 • उदयपुर, सोमवार 11 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

हैदराबाद (तेलगांना) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान, इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो रही है।

26 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर हैदराबाद (तेलगांना) में श्री श्याममंदिर कांचीपुरम्– हैदराबाद में संपन्न हुआ। इसमें 77 परिवारों को राशन प्रदान किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान इन्द्रकुमार जी अग्रवाल (सचिव–श्याम मंदिर सेवा समिति), अध्यक्ष श्रीमान नरेशकुमार जी डाकोतिया (कोषाध्यक्ष–श्याम मंदिर सेवा समिति), विशिष्ट अतिथि श्रीमान प्रह्मपादराय जी, एवं श्री रामदेव जी अग्रवाल, श्री राजकुमार जी विघ, श्री एस. सुमित्रा जी, श्री पण्डित रामशरण जी, श्री उत्तम जी जैन डामरानी (समाजसेवी) आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् महेन्द्रसिंह जी, श्रीमती संध्या रानी, श्री के. अरूण जी ने व्यवथाएं देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

अलीगढ़ व भायंदर में फिजियोथैरेपी शिविर

अलीगढ़ व मुम्बई में 29 अगस्त को संस्थान की स्थानीय शाखाओं की ओर से निःशुल्क फिजियोथैरेपी एवं जांच शिविर आयोजित किए गए। अलीगढ़ के विकास नगर में सम्पन्न शिविर में डॉक्टर अनिल कुमार जी व सतीश कुमार जी ने विभिन्न बीमारियों की जांच की एवं फिजियोथैरेपी द्वारा उनका उपचार किया। समाजसेवी राजेन्द्र जी वार्ष्णेय, कमल जी अग्रवाल व चन्द्रशेखर जी गुप्ता ने शिविर संचालन में सहयोग किया।

भायन्दर (मुम्बई) शाखा की ओर से भी इसी दिन ओस्तवाल बगीची में निःशुल्क फिजियोथैरेपी शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में समाजसेवी कांतिलाल जी बाबेल, मुम्बई शाखा संयोजक कमल जी लोढ़ा व स्थानीय शाखा संयोजक किशोर जी जैन ने सेवाएं दी।

भायन्दर शाखा के प्रभारी मुकेश जी सेन ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि फिजियोथैरेपी केन्द्र में रोजाना 50 से अधिक लोग निःशुल्क फिजियोथैरेपी सुविधा का लाभ लेते हैं।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

छिटकी जिन्दगी को लगे पंख

रोहित अहिरवार (25) मंडीदीप (भोपाल) में एक आर. ओ. प्लांट में करते हुए माता–पिता सहित 7 सदस्यों के परिवार में जीवन निर्वाह कर रहा था। 4 बहनों में दो का विवाह हो चुका था, जबकि दो की शादी शेष है। माता– पिता रामवती देवी–भैयालाल अहिरवार दोनो ही वृद्ध हैं। पिता परिवार पोषण में मदद के लिए मजदूरी करते हैं। गृहस्थी की गाड़ी ठीक से आगे बढ़ रही थी कि अचानक एक हादसे ने पूरे परिवार को अस्त–व्यस्त कर दिया। फरवरी 2020 की पहली तारीख को रोहित भैरोपुर स्थित घर से मंडीदीप जाने के लिए निकला। भोपाल से मंडीदीप जाने वाले निकटवर्ती स्टेशन पर पहुंचा और प्लेटफॉर्म के निकट खड़ा था। ट्रेन आने में कुछ ही मिनट शेष थे। तभी कोई व्यक्ति दौड़ता हुआ उसके पास से गुजरा और रोहित उसके धक्के से रेलवे ट्रेक पर जा गिरा। संयोगवश तभी ट्रेन धड़धड़ाते हुए आ पहुंची और उसके दोनों पांवों को चपेट में लेते हुए आगे बढ़ गई दोनों पांव कट चुके थे। उसे तत्काल भोपाल के एक अस्पताल ले जाया गया जहां उसका इलाज चला। दोनों पांव कटने से परिवार पर संकट के बादल छा गए। परिवार आर्थिक संकट का सामना करने लगा। किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह भी दी लेकिन आर्थिक संकट के चलते रोहित के लिए यह नामुमकिन था। ठीक एक साल बाद भोपाल में 22 जनवरी2021 को नारायण सेवा संस्थान की कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगा। प्रचार–प्रसार से रोहित को पता लगने पर वे भी शिविर में पहुंचे, जहां घुटनों से ऊपर तक कृत्रिम पांव बनाकर लगाए गए। रोहित अब चलते है और जल्दी ही उन्हें काम पर लौटने की उम्मीद हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

एक मेरे मिलने वाले कोई कहीं मिल गये कपड़े बदल रखे थे पीले –पीले, लाल लगा रखे थे। मैंने कहा आप ऐसे– कैसे? बोले कि मजबूरी से मैंने कहा समझ में नहीं आया। मैंने कहा आइये दूध पीते हैं। कहते हैं मेरे पास बाबूजी 40 लाख रुपये ग्रेजुऐटी मिली थी। पड़ोसी ने कहा 40 लाख रुपये मेरे साथ पार्टनरशीप में लगा दो दोनों की कम्पनी खोल देते हैं 6 महिने में तीन गुना कर दूंगा। तुम्हारा 40 लाख के 1 करोड़ 20 लाख हो जायेगा। मैं बाबूजी लोभ में आ गया अब 5–6 महिने बाद उसने दिवाला निकाल दिया वो खुद भी कपड़े बदलकर के कहीं चला गया मैं भी कपड़े बदल की तरह के आ गया। हमारे पास कुछ रहा ही नहीं। घर–गृहस्थी बर्बाद हो गयी लोभ में आज से भूतकाल की पूर्व दुःखद यादों को बार–बार याद नहीं करेंगे। कभी आप ही नहीं मेरे से विश्वास कर लेंगे। क्योंकि ऐसी तो कोई गोली निकली नहीं है भाई के वो गोली खा लो और पूरा दुःखद बातें सब भूल जावे ऐसा तो नहीं होता लेकिन जब भी मन में आयेगा तो उसके कहेंगे अभी इसको छोड़ो अच्छी बातें याद करते हैं। वर्तमान को याद करते हैं, वर्तमान में हम हार्ड केस को चाहते हैं क्या चाहते, हार्डकेस क्या है? वह हमारा पुण्य है हार्ड केस हमारा दान, हार्डकेस इन दिव्यांगों की सेवा हार्डकेस इन युग– युग के घावों को मरहम लगाना हार्डकेस, इनका भण्डारा हार्डकेस ये है आपके आत्मा का धर्म, आपके आत्मा का दान है।

प्रगट चारि पद धर्म के
कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें
दान करइ कल्यान।।

आज से संकल्प कीजिए। आपकी कमाई का आप का कम से कम 10 परसेन्ट अरे 90 परसेन्ट तो कभी नहीं आती।

दान दिया था जो से जो भी।
दिव्यांगो के संग रोमांच दे।।

सम्पादकीय

मानवता एक सद्गुण है जो हरेक मानव में अपेक्षित है। मानवता के मानदण्डों में किसे–किसे रखा जाय यह निर्विवाद है। मानव का एक गुण है परोपकार। जो केवल अपने लिये सोचे वह पशु कहा गया है और जो सर्वहित में सोचे वह मानव।

यह स्व और परहित क्या है? यहाँ यह भी सोचना आवश्यक है कि स्वहित और परहित कोई विरोधी भाव नहीं है। पर जो स्वहित में ही लीन रहता है वह सीमति हो जाता है जबकि परहित वाला परार्थ तो साध ही लेता है पर साथ–साथ स्वहित भी सध जाता है।

औरों के लिये कुछ करेंगे तो मन की निर्मलता प्रकट होगी। त्याग का भाव उत्पन्न होगा तथा स्व को परिधि व पर को केन्द्र में रखने का स्वभाव बनेगा। यही स्वभाव मानवता को सिद्ध करता है। मानव के लिये मानवता एक अनिवार्य विशेषता है, यदि मानवता ही नहीं तो कैसा मानव?

कुछ काव्यमय

मानवीय गुणों का संचय,
मानवता का पालन।
मानव कल्याण का भाव
और मानव–मन संचालन।
ये भले कठिन हो
पर अनिवार्य है।
इनके बिना मानव
किसे स्वीकार्य हैं ?

- वरदीचन्द राव

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सेटेलाइट हॉस्पीटल में ही डॉ. आर. के. पामेचा थे। कैलाश इन्हें जानता था। उसने सोचा कि अगर वे सेवा के रूप में साथ आने को तैयार हो जायें तो उनसे पूछने में क्या दिक्कत है। ज्यादा से ज्यादा मना ही करेंगे। कैलाश ने उनसे निवेदन किया तो वे खुशी–खुशी शिविर में भाग लेने को तैयार हो गये।

पिताजी की अंगूठी बेचने की जरूरत ही नहीं पड़ी। बड़े भाई राधेश्याम ने अंगूठी यादगार के रूप में अपने पास रख ली और इसके बदले 650 रु. दे दिये। इससे बाकी बचे बच्चों के लिये ड्रेसें खरीद ली और किसी के हाथ पई भिजवा भी दी। कैलाश के मन में एक बात और घूम रही थी। सिर्फ डॉक्टर को ले जाने से क्या होगा, दवाओं की भी तो आवश्यकता होगी। उसने डॉ. पामेचा से आवश्यक दवाओं की सूचि मांग ली। डॉक्टर ने सूचि दे दी तो बाजार से सभी दवाएं मंगवा ली। सिर्फ एक दवा नहीं मिली। कई दुकानों की खाक छानी मगर कहीं नहीं मिली। जब आस छोड़ दी तो एक छोटी सी दुकान पर यह दवा भी मिल गई।

सेवा कार्य की जानकारी ज्यूं–ज्यूं लोगों को मिलती जा रही थी, त्यूं–त्यूं अधिकाधिक लोग इससे जुड़ते जा रहे थे। सोजत रोड़ से पी.जी. जैन का पोस्टकार्ड आया, उन्होंने लिखा कि वे जीवन भर 100 रु. प्रति माह भेजते रहेंगे। उन्हें किसी जैन पत्रिका के माध्यम से नारायण सेवा के कार्यों के बारे में पता चला था। पोस्टकार्ड आया उसके अगले ही दिन इनका 1200 रु. का मनीऑर्डर भी आ गया जिसमें लिखा था कि अपने कहे अनुसार वे 12 माह की राशि एक साथ भेज रहे हैं। कैलाश बहुत खुश हो गया। किसी से आप सहायता मांगो और वो फिर सहायता दे, यह और बात है मगर कोई स्वेच्छा से, बिना मांगे, सहायता करे उसका तो कोई मुकाबला ही नहीं।

अंश - 132

अपनों से अपनी बात

हमारा जीवन अच्छा हो

सभी बुर्जुर्गो को पूर्ण आदर, सम्मान के साथ ये तो कृपा व्यासपीठ की है। ये कथा वेदव्यास महाराज जी की है। मुझे आप से वार्ता करने का ये सौभाग्य है।

तात् स्वर्ग, अपवर्ग सुख।
धरिह तुला इक अंग।।
तूल ना ताहिं सकल मिली,
जो सुख लव सत्संग।

हनुमान जी महाराज पधार गये है–

घूमा दो म्यारा बालाजी।
घमड़ घमड़ घोटो।

हनुमान जी महाराज की कृपा से ही हम सत्संग में बोल सकते हैं, सुन सकते हैं। रोते हुए नये वल्कल वस्त्र। प्रातःकाल आज स्वाध्याय कर रहा था, सोच रहा था। कैसे हुए होंगे मैथलीशरण गुप्त चिरगांव झाँसी से जिन्होंने सांकेत लिख दिया? कैसे हुए होंगे गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज जिन्होंने आपको और हमारे को जीवन का पाठ पढ़ाया? हाँ, ये जीवन का पाठ देवरानी– जेठानी कैसे रहे?

पिता–माता के सम्बन्ध कैसे रहे? भाई–भाई, भाई हो तो भरत जैसा, जब तक यह विश्व रहेगा तब तक बोलेंगे भाई हो तो भरत जैसा। सेवक हो तो हनुमान जी जैसा। ऐसी एक कथा सीता माता ने जब हाथ बढ़ा दिये वल्कल वस्त्र लेने के लिए कौशल्या जी रो पड़ी।

कौशल वधू, विदेह लली,
मुझे छोड़कर कहाँ चली।

फिर कौशल्या माता बोली

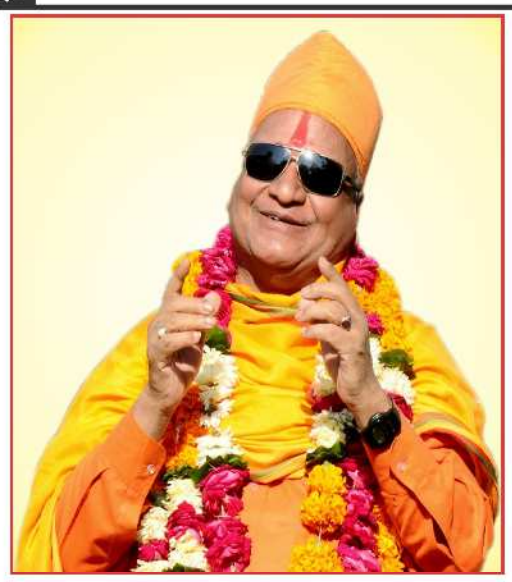

सीते तूं तो मेरे प्राणों का आधार है, प्रिय मेरी बेटी से भी अधिक है, बहू भी है, बेटी भी है। मुझे छोड़कर कहाँ जाती है? मंझली बहन राज्य लेवे। उसे पुत्र को दे देवे।

इतना बड़ा दिल जिनका था। वो कौशल्या माता भी बोली सीते आप मत जाना। राम जी ने भी समझाया। वहाँ बाघ है, वहाँ भालू है, वहाँ शेर चिंघाड़ते है। हिंसक पशु रहते हैं। नदियों का पानी इतना ठण्ड़ा है, जैसे बर्फ में हाथ डाल दिया हो।

बजरंग बली की कृपा से मैं बोल पा रहा हूँ और आप सुन पा रहे हैं, समझ पा रहे हैं। ये आपस की परिचर्चा है, ये घर की बात मानियेगा। मैं पराया नहीं हूँ। आपका हूँ। सभी अपने है। केवल ईश्वर एक है। वो सर्वव्यापक है, आपने कमल के फूल के दर्शन तो बहुत किये ही है। बाजार में 20 रुपये में एक कमल का फूल मिल जाता है।

परन्तु कमल के पत्ते के नीचे आधार क्या होता है, ये कवलियाँ बोलते है इसको और इसकी बचपन में हम लोग सब्जी बनाकर के भी जीमा करते थे। इस कवलिये को तोड़ेंगे, ये देखिये अन्दर जैसे बिल्कुल शंकरकन्दी हो, जैसे गाजर हो, जैसे केले के अन्दर का गुदा हो, भाया ये कथा क्यों सुनते है, इसलिए कि हमारा जीवन अच्छा हो जाये। सीता जैसा त्याग आ जावे। आपके वहाँ गर्मी पड़ती है, वहाँ सर्दी पड़ती है। वहाँ ठण्ड़ बहुत पड़ती है, वहाँ बरसात बहुत पड़ती है। प्रभु तुम तो हो, वहाँ आप तो होंगे ना मेरे साथ? आपके साथ रहकर मैं सब निभा लूंगी। सब व्रत, नियम निभा लूंगी। सीता–माता ने बार–बार कहा– आँखों में आँसू निकल रहे हैं। मुझे मालूम है आपके आँखों के पौर गिले हो गये।

हर आँख यहाँ
यूं तो बहुत रोती है।
हर बूंद मगर
अश्क नहीं होती है।।

–कैलाश 'मानव'

परोपकार

जब युधिष्ठिर गुरु द्रोणाचार्य के पास विद्याध्ययन के लिए गए तो प्रथम दिन गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर एवं अन्य शिष्यों को सिखाया कि क्रोध नहीं करना चाहिए क्योंकि क्रोध अपनी माँ को खा जाता है। उसके पश्चात् गुरु द्रोणाचार्य ने अनेक बातें सिखाई, परन्तु युधिष्ठिर उस क्रोध वाले पाठ में ही अटके रहे।

उसी पाठ को सीखते रहे। युधिष्ठिर गुरु द्वारा पढ़ाए गए अन्य पाठों को नहीं सीख पाए। उन्होंने मन में ठान लिया था कि जब तक यह पाठ समझ में नही आ जाता, तब तक आगे के पाठ मैं नहीं सीखूँगा। कुछ समय पश्चात् परीक्षा आयोजित की गई। कोई अन्य परीक्षक थे, जिन्होंने सभी की परीक्षा ली।

युधिष्ठिर अन्य सभी विद्यार्थियों से पीछे रहे। युधिष्ठिर प्रथम पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के ही उत्तर दे पाए, अन्य पाठों के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाए। परीक्षक ने युधिष्ठिर से कहा– तुम परीक्षा में असफल हुए हो। तुम्हें दण्ड मिलेगा। अपना हाथ बढ़ाओ।

परीक्षक ने युधिष्ठिर के हाथ पर डंडे से सौ प्रहार किए। परन्तु युधिष्ठिर के मुख पर, पहले प्रहार से सौंवे प्रहार तक शांति समान रूप से बनी रही। वे तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। जब गुरु द्रोणाचार्य ने यह दृश्य देखा तो उन्होंने परीक्षक से पूछा –क्यों मार रहे हो? परीक्षक ने उत्तर दिया – इसे 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं आता है। तब गुरु द्रोणाचार्य ने कहा–वास्तव में, युधिष्ठिर ने ही 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ को समझा है, क्योंकि इसके मुख की शांति पहले प्रहार से लेकर अंतिम प्रहार तक एक समान बनी रही। इसने तनिक भी क्रोध नहीं किया। पाठ पढ़ाना तो आसान है, परन्तु उसे जीवन में आचरण में उतारना बहुत कठिन कार्य है।

– सेवक प्रशान्त भैया

हृदय की सही से पंपिग न हो पाने से धड़कने होती अनियंत्रित

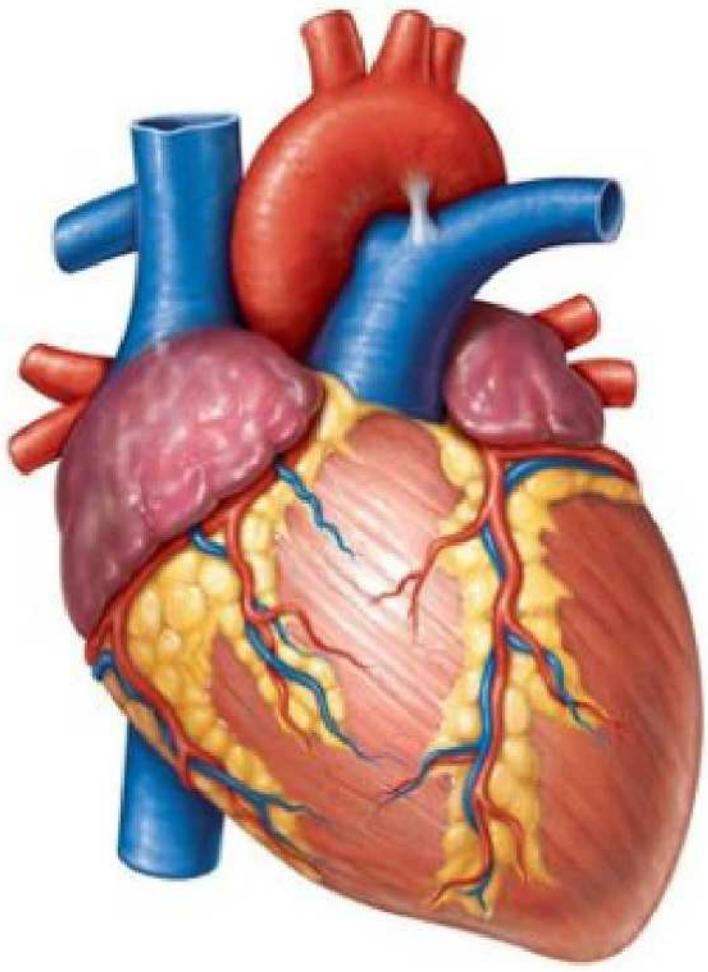

सडन कार्डियक अरेस्ट (एससीए) हार्ट अटैक नहीं होता। हृदय के विद्युतीय तंत्र में अचानक गड़बड़ी से धड़कनें अनियमित व अनियंत्रित हो जाती हैं। हृदय के ठीक से पंपिग न करने से अंगों में रक्तप्रवाह सही तरह से नहीं हो पाता। दिमाग में रक्त संचार अवरूद्ध होने से व्यक्ति की धड़कनें बढ़ती है, बेहोशी व चक्कर आते हैं। तुरंत इलाज न दिया जाय तो मृत्यु हो सकती है। हृदय अचानक काम करना बंद कर देता है। 30–40 वर्ष के व्यक्तियों में इसके मामले अधिक है। हार्ट डिजीज से होने वाली मौतें में से 50 प्रतिशत मृत्यु एससीए से होती है।

ध्यान रखें : ईकोकार्डियोग्राफी, स्ट्रेस टेस्ट, हॉल्टर टेस्ट और हृदय संबंधी जांचें करवाएं, जिनमें एससीए की आशंका रहती है। ऑटोमेटेड इम्प्लांटेबल कार्डियोवर्टर डिफ्रिबिलेटर नामक पेसमेकर लगाते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

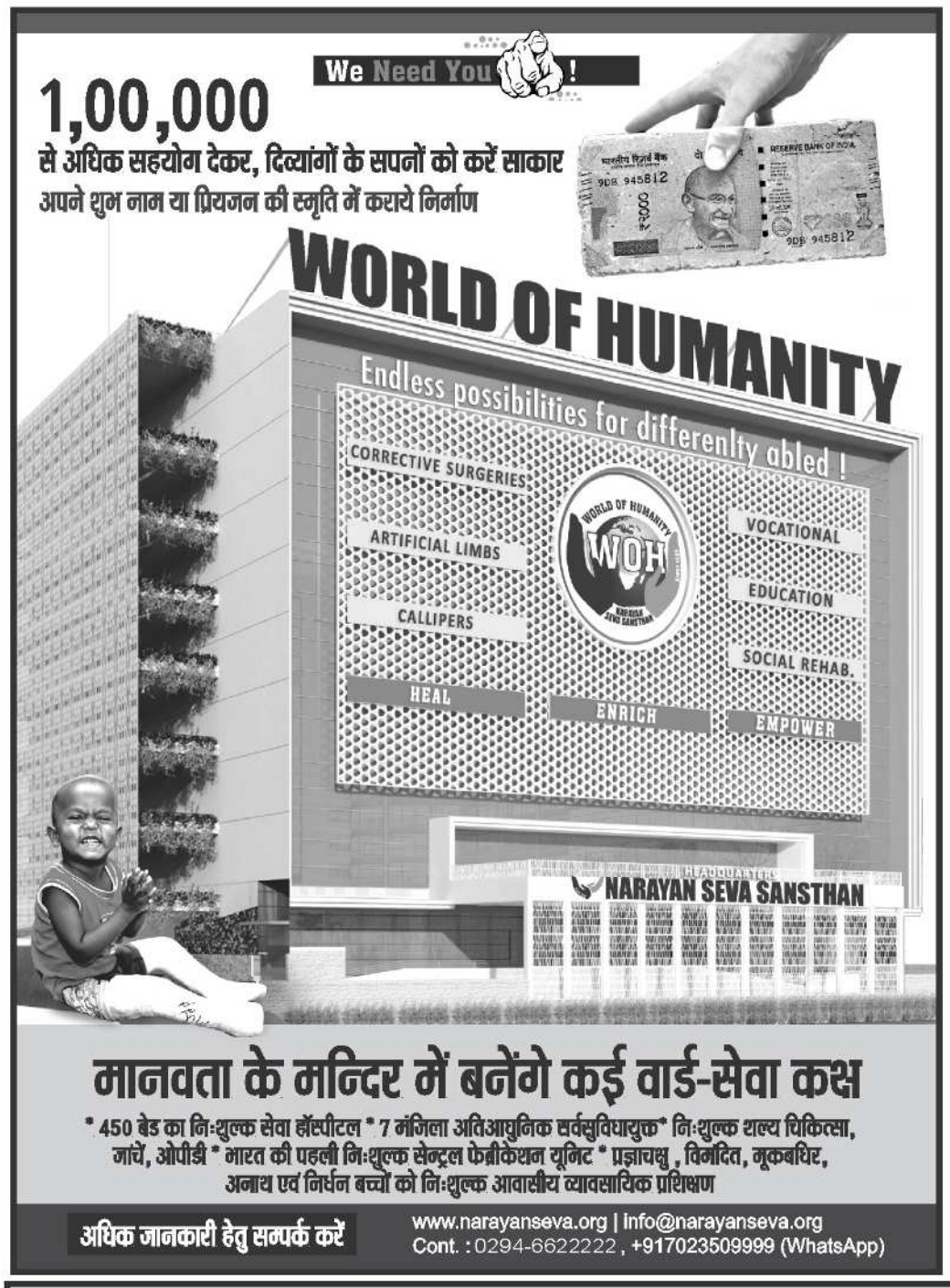

अनुभव अमृतम्

तूं ही तूं। सब तरफ प्रभु है– भैया। शुभकामना परिवार के हर साधक मेंईश्वर बिराज रहा है। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। कैलाशचन्द्र अग्रवाल साढ़े तीन हाथ की काया, दो सौछः हड्डियाँ, सतरह हजार करोड़ खरब कोशिकाएँ वाह भई वाह। हाँ, नाभि में मणीपुरचक्र मालूम नहीं, अवश्यहोता ही होगा। जब कहा गया समुद्र मंथन हुआ तबअमृत निकला ही होगा– महाराज। ट्रांसफर हो गया सरदार शहर। कमलाजी ने कहा– सामान अभी तो आया है थोड़े दिन पहले। कोई बात नहीं, होता है ऐसा। अपन भारत सरकार के अधिकारी हैं, इस्पेक्टर ऑफ पोस्ट ऑफिसेज भगवान ने बना दिया। एक सौ तैबीस ब्रांच पोस्ट ऑफिस और झालरापाटन के पास में फेयरवेल दिया। इंस्पेक्टर साहब आप बहुतकम समय रहे। आपने हर ब्रांच पोस्ट ऑफिस में गायत्री तपोवन मथुरा से आये हुए सद्वाक्य लगा दिये। हाँ, महाराज जहाँ–जहाँ गये, जो भी पोस्ट आफिसेज में पहुँचे सब में दिवाल पर, कम से कम चार–चार। और हथोड़ी तो बेग में ही रहती थी– महाराज, कीलियाँ। किसी को कहो कि– लगा देना, जरूर लगा देंगे–साहब। दराज में रख देवें मालूम नहीं। सबकी अपनी–अपनी प्रायोरिटी है– महाराज, बोला– ये काम करना है, ये मेरा खास, इनसे मेरा मन बहुत मिलता है। इनसे कम मिलता है, ये आदमी दिखना नहीं चाहिये। उनसे मेरी दोस्ती, उनसे मेरी दुश्मनी। ये दुनिया में चलता रहता है। भूत, भविष्य, वर्तमान। आदमी अन्दरनहीं देखता है, अन्दर क्या है? ये आज्ञाचक्र का अमृतकौन चखेगा? कैलाश, हाँ विशुद्धि चक्र कंठ में। अनाहतचक्र हृदय में, मूलाधर चक्र, स्वादिष्ठान चक्र और ये ही सहस्त्रार्थ चक्र से मिल जाते हैं तो कुण्डली मिल जातीहै।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 259 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023